Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 1, January-2023, ISSN 2230-7540

भारत की नई शक्षा नीति 2020 पर एक नजर

Anjali Sheokand*

Assistant Professor, Tika Ram College of Education, Sonipat

*सार - आकस्मिकताओं के इस परिदृश्य में शक्षा की महत्वपूर्ण और निर्णायक भू मका है। इस लए राष्ट्रीय शक्षा नीति **2020** को इस सुधार के ढांचे में तब्दील कया गया है, जो उन आ थक और सामाजिक संकेतकों को मजबूत करने के अलावा देश में एक नई शक्षा प्रणाली बनाने में मदद कर सकता है। इसमें अभी भी सुधार की जरूरत है। एनईपी **2020** बहु- वषयक वश्व वद्यालयों और स्वायत्त कॉलेजों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण उच्च शक्षा प्रदान करता है। हमने इस पत्र में नीति की गंभीर रूप से जांच की है और इसके महत्व को बढ़ाते हुए इसके पूर्ववर्ती के साथ-साथ इसके पूर्ववर्ती के साथ एक निर्बाध निरंतरता सुनिश्चित करने के लए परिवर्तनों का प्रस्ताव दिया है। वर्तमान पेपर वश्व वद्यालय स्तर पर एनईपी **2020** के प्रावधानों और प्रबंधन प्रथाओं के लए आवश्यकताओं के वश्लेषण का वर्णन करता है।*

कीवर्ड - भारत, नई शक्षा नीति, एक नजर

----------X----------

1. परिचय

परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत और अटल नियम है। यहां पल पल बदलता रहता है। परिवर्तन की प्र क्रया से कोई भी समाज अछूता नहीं है। सामाजिक परिवर्तन समाज की प्रकृति है। भारतीय समाज भी इससे अछूता नहीं है। भारतीय समाज के ऐतिहा सक अध्ययन से ज्ञात होता है क आदिम युग से लेकर वर्तमान युग तक अनेक सामाजिक, आ थक, राजनीतिक एवं अन्य परिवर्तन भी हुए हैं। परिवर्तन मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं। एक वे परिवर्तन जो प्रकृति द्वारा कए जाते हैं और दूसरे प्रकार के परिवर्तन मनुष्य स्वयं करते हैं। प्राकृतिक परिवर्तन हमारे नियंत्रण में नहीं हैं। ले कन मानव परिवर्तन के माध्यम से जीवन और समाज में परिवर्तन लाकर कुछ नया करने की को शश करता है। वर्तमान में यदि कसी समाज में वकास की दृष्टि से कुछ परिवर्तन करना है तो पहले शक्षा नीति में परिवर्तन करना चाहिए। कसी भी देश में शक्षा की तस्वीर से पता चलता है क शक्षा का स्थान वहां की सरकार की प्राथ मकता होती है और वह इससे कतना निपटती है।[1]

हाल के वर्षों में दुनिया भर के बेहतर गुणवत्ता वाले वश्व वद्यालयों की सूची में भारत के पछड़ने के बाद उम्मीद की जा रही थी क सरकार और पूरा सस्टम इस मामले में सुधार के लए कुछ ठोस कदम उठाएगा ता क इस स्थिति में कुछ सुधार कया जा सके. पूरे देश के वकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने 34 साल बाद भारत की शक्षा नीति में बदलाव करने का फैसला कया। नई शक्षा नीति बनाने के लए केंद्र सरकार ने 2017 में डॉ. के.के. कस्तूरीरंगन ने राष्ट्रीय शक्षा नीति 2019 का प्रारूप तैयार करने वाली कस्तूरीरंगन स मति की अध्यक्षता में एक स मति का गठन कया। भारत में जुलाई 2020 में केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय शक्षा नीति 2020 को मंजूरी दी। इस स्वीकृति के संबंध में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट कया और शक्षा मंत्री मानव संसाधन वकास "श्री रमेश पोखरियाल निशक" ने प्रेस कांफ्रेंस कर जनता को जागरूक कया। यह भी स्पष्ट कया गया क मानव संसाधन वकास मंत्रालय का नाम बदलकर " शक्षा मंत्रालय" कर दिया गया है। इससे पहले 1985 में शक्षा मंत्रालय' का नाम बदल दिया गया था।[2]

2. भारत में नई शक्षा नीति

2020 की नई शक्षा नीति के तहत 2030 तक शक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करना है। पाठ्यक्रम को वर्तमान में चल रहे 10+2 मॉडल के स्थान पर 5+3+3+4 की शक्षा व्यवस्था के आधार पर वभाजित कया जाएगा। नई शक्षा नीति 2020 के लए केंद्र और राज्य सरकारों के निवेश का लक्ष्य भी निर्धारित कया गया है जिसमें शक्षा क्षेत्र में सहयोग के लए केंद्र और राज्य सरकारें देश के सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत के बराबर शक्षा क्षेत्र में निवेश करेंगी।[3]

www.ignited.in

3. नई शक्षा नीति **2020** चरण

नई शक्षा नीति के चरणों को चार चरणों में बांटा गया है। नई नीति, इसे पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है। पुरानी शक्षा नीति 10+2 फॉर्मूले पर आयोजित की गई थी, ले कन नई शक्षा नीति 5+3+3+4 फॉर्मूले पर आधारित है। नए पैटर्न में 3 साल की स्कूली शक्षा और 12 साल की स्कूली शक्षा शा मल है। नई नीति का पालन करना सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों के लए अनिवार्य कर दिया गया है।[4]

नई शक्षा नीति के चार चरण

फाउंडेशन स्टेज: नई शक्षा नीति के फाउंडेशन स्टेज में 3 से 8 साल तक के बच्चे शा मल हैं। फाउंडेशन स्टेज 5 साल के लए तय कया गया है। आंगनवाड़ी में 3 वर्ष की पूर्वस्कूली शक्षा और कक्षा 1 और 2 की स्कूली शक्षा की जाएगी जिसके तहत छात्रों के भाषा कौशल और कौशल स्तर का मूल्यांकन कया जाएगा और इसके वकास पर ध्यान केंद्रित कया जाएगा।

प्रारं भक अवस्था: इस अवस्था का समय 3 वर्ष रखा जाता है। इस स्टेज में 8 से 11 साल के बच्चे शा मल हैं। जिसमें उनके कक्षा 5 तक के बच्चे होंगे। नई शक्षा नीति के इस चरण में छात्रों के संख्यात्मक कौशल को मजबूत करने पर वशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही सभी बच्चों को क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान भी दिया जाएगा। साथ ही प्रयोगों के माध्यम से बच्चों को वज्ञान, कला, ग णत आदि की शक्षा दी जाएगी।

मध्य अवस्था: इस अवस्था की अव ध 3 वर्ष निर्धारित की गई है। इस चरण में कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों को शा मल कया गया है, जिसमें कक्षा 6 के बच्चों द्वारा वषय आधारित पाठ्यक्रम पढ़ाया जाएगा और को डंग भी शुरू की जाएगी। साथ ही सभी बच्चों को वोकेशनल टेस्टिंग के साथ-साथ वोकेशनल इंटर्न शप के अवसर भी दिए जाएंगे, जिसका उद्देश्य स्कूली शक्षा के दौरान ही बच्चों को रोजगार के योग्य बनाना है।[5]

द् वतीयक अवस्था: इस अवस्था की अव ध 4 वर्ष होती है। इस चरण में 9वीं कक्षा के 12वीं कक्षा के छात्र शा मल हैं। इसमें वषयों का गहन अध्ययन कया जाएगा। इसी चरण में 8वीं से 12वीं कक्षा के पाठ्यक्रमों का शै क्षक पाठ्यक्रम भी शुरू कया गया है और वैकल्पिक शै क्षक पाठ्यक्रम शुरू कया गया है। छात्र अपनी पसंद के अनुसार अपने वषय चुन सकते हैं, कसी निर्दिष्ट स्ट्रीम के भीतर नहीं। नई शक्षा नीति के तहत छात्रों को वषय चुनने की आजादी दी गई है। छात्र वज्ञान के वषयों के साथ-साथ कला या कोरमास के वषय का एक साथ अध्ययन कर सकते हैं।

3.1 भारत की नई शक्षा नीति के चार चरण

फाउंडेशन स्टेज: नई शक्षा नीति के फाउंडेशन स्टेज में 3 से 8 साल तक के बच्चे शा मल हैं। फाउंडेशन स्टेज 5 साल के लए तय कया गया है। आंगनवाड़ी में 3 वर्ष की पूर्वस्कूली शक्षा और कक्षा 1 और 2 की स्कूली शक्षा की जाएगी जिसके तहत छात्रों के भाषा कौशल और कौशल स्तर का मूल्यांकन कया जाएगा और इसके वकास पर ध्यान केंद्रित कया जाएगा।[6]

प्रारं भक अवस्था: इस अवस्था का समय 3 वर्ष रखा जाता है। इस स्टेज में 8 से 11 साल के बच्चे शा मल हैं। जिसमें उनके कक्षा 5 तक के बच्चे होंगे। नई शक्षा नीति के इस चरण में छात्रों के संख्यात्मक कौशल को मजबूत करने पर वशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही सभी बच्चों को क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान भी दिया जाएगा। साथ ही प्रयोगों के माध्यम से बच्चों को वज्ञान, कला, ग णत आदि की शक्षा दी जाएगी।

मध्य अवस्था: इस अवस्था की अव ध 3 वर्ष निर्धारित की गई है। इस चरण में कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों को शा मल कया गया है, जिसमें कक्षा 6 के बच्चों द्वारा वषय आधारित पाठ्यक्रम पढ़ाया जाएगा और को डंग भी शुरू की जाएगी। साथ ही सभी बच्चों को वोकेशनल टेस्टिंग के साथ-साथ वोकेशनल इंटर्न शप के अवसर भी दिए जाएंगे, जिसका उद्देश्य स्कूली शक्षा के दौरान ही बच्चों को रोजगार के योग्य बनाना है।[7]

द् वतीयक अवस्था: यह अव ध 4 वर्ष की होती है। यह स्तर 9वीं-12वीं कक्षा के छात्रों को शा मल करता है। वषयों का व्यापक अध्ययन कया जाएगा। 8वीं-12वीं कक्षा के शैक्ष णक कार्यक्रम और वैकल्पिक शै क्षक पाठ्यक्रम भी शुरू हो गए हैं। छात्र कसी भी स्ट्रीम से वषय चुन सकते हैं। छात्र नई शक्षा रणनीति के तहत वषय चुन सकते हैं। वज्ञान और कला/कोरमास का एक साथ अध्ययन कया जा सकता है। 10+2 प्रणाली ने सरकारी स्कूलों को प्री-स्कूल चलाने से रोका। कक्षा 1-10 सामान्य शक्षा, कक्षा 6 नम वषय और कक्षा 6 स्वतंत्र वकल्प थी। [8]

4. शक्षा नीति से संबं धत चुनौतियाँ

- सहयोग: राज्यों की शक्षा एक समवर्ती वषय है। यही कारण है क अ धकांश राज्यों में उनके स्कूल बोर्ड हैं। इस लए राज्य सरकारों को इस फैसले के वास्त वक क्रयान्वयन के लए आगे आना होगा। साथ ही, एक राष्ट्रीय उच्च शक्षा नियामक परिसर को शीर्ष नियंत्रक संगठन के

www.ignited.in

रूप में लाने के वचार का राज्यों द्वारा वरोध कया जा सकता है।[9]

- महंगी शक्षा: नई शक्षा नीति से वदेशी वश्व वद्यालयों में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त हुआ है। व भन्न शक्षा वदों का मानना है क भारतीय शक्षा प्रणाली के लए वदेशी वश्व वद्यालयों में प्रवेश महंगा होने की संभावना है। नतीजतन, निम्न वर्ग के छात्रों के लए उच्च शक्षा हा सल करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- शक्षा का संस्कृतिकरण: द क्षण भारतीय राज्यों का आरोप है क सरकार त्रि-भाषा फार्मूले के साथ शक्षा का संस्कृतिकरण करने की को शश कर रही है। बच्चों की शक्षा के माध्यम से उनकी मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में भी राज्यों के सामने कई समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं। उदाहरण के लए, व भन्न राज्यों के लोग दिल्ली जैसे केंद्र अ धकृत प्रदेश में रहते हैं। [10]
- भरण-पोषण संबंधी अपर्याप्त जांच: कुछ राज्यों में शुल्क अभी भी मौजूद है वनियमन मौजूद है ले कन ये नियामक प्र क्रयाएं असी मत दान के रूप में मुनाफाखोरी पर अंकुश लगाने में असमर्थ हैं।

5. निष्कर्ष

नई राष्ट्रीय शक्षा नीति, 2020, जिसे 21वीं सदी के भारत की जरूरतों को पूरा करने के लए भारतीय शक्षा प्रणाली को बदलने के लए केंद्र सरकार द्वारा अनुमोदित कया गया है, अगर इसे सफलतापूर्वक लागू कया जाता है, तो यह नई प्रणाली भारत को दुनिया के अग्रणी देशों में से एक बना देगी। नई शक्षा नीति, 2020 के तहत 3 वर्ष से 18 वर्ष तक के बच्चों को शक्षा का अ धकार अ धनियम, 2009 के तहत रखा गया है। 34 वर्ष बाद आई इस नई शक्षा नीति का उद्देश्य सभी को उच्च शक्षा प्रदान करना है। छात्र, जिसका उद्देश्य 2025 तक पूर्व-प्राथ मक शक्षा (3-6 वर्ष की आयु सीमा) को सार्वभौ मक बनाना है।

6. संदर्भ

1. बेकर, डी। (2017)। सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली, 1881-1997: जमुना के तट पर एक अलेक्जें ड्रया? एम. हसन (सं.) में। नॉलेज, पावर एंड पॉ लटिक्स: एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस इन इं डया, पीपी 66-113।
2. अमीन, एम.एम. (2018)। "डब्ल्यूटीओ शासन के तहत उच्च शक्षा: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य।" शै क्षक योजना और प्रशासन जर्नल, 22 (1), 45-58।
3. आनंदकृष्णन, एम। (2017)। उच्च शक्षा II: ज्ञान आयोग की आलोचना। आ र्थक और राजनीतिक साप्ताहिक। 42 (7), पीपी. 557-60.
4. बसु, ए. (2015). दिल्ली वश्व वद्यालय की नींव और प्रारं भक इतिहास। आरई फ्राइकेनबर्ग (संपा.) दिल्ली थ्रू एजेस: एसेज़ इन अर्बन हिस्ट्री, कल्चर एंड सोसाइटी, पीपी. 257-286.
5. कोहेन, एम.डी., मार्च, जे.जी. और ऑलसेन, जे.पी. (2015) संगठनात्मक पसंद का एक कचरा कर सकते हैं मॉडल। प्रशासनिक वज्ञान त्रैमा सक, 17, पीपी। 1-25
6. ब्लेकली, आई। और कोगन, एम। (2017)। वश्व वद्यालयों का संगठन और शासन। उच्च शक्षा नीति, 20, पीपी. 477-493.
7. हरमन, के.एम. (2019)। अकाद मक संगठन में संस्कृति और संघर्ष: वश्व वद्यालय की दुनिया के प्रतीकात्मक पहलू। जर्नल ऑफ एजुकेशनल एड मनिस्ट्रेशन, 27(3), 30-54।
8. चक्रवर्ती, के. (2020). दिल्ली वश्व वद्यालय: हा लया आंदोलन। सोशल साइंटिस्ट, 1 (3), पीपी.61-66।
9. चटनिस, एस। (2017)। शक्षा की एक औपनिवे शक प्रणाली को तैयार करना और स्वतंत्र भारत को वकास की ओर ले जाना। उच्च शक्षा, 26 (1), 22-41।
10. दास, वी. (2017). स्नातक शक्षा के पुनर्गठन की दिशा में। जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन (यूजीसी), 19(2), पीपी 259-274।

Corresponding Author

Anjali Sheokand*

Assistant Professor, Tika Ram College of Education, Sonipat

www.ignited.in